प्रातः क्लास 3-4-68 ओमशान्ति। "शिव बाबा याद है ?"

ओमशान्ति। जहां-तहां लिखा हुआ है शिव बाबा को याद करो। फिर उससे क्या होगा, यह भी लिखना पड़े। शिव बाबा को याद करने से ही सभी पाप कट जाते हैं। और पुण्यात्मा बन जाते हैं। मनुष्यों की बुधि में यह नहीं है कि हम कैसे पापात्मा बन गये हैं। तुम बच्चों को तो बाप ने समझाया है तुम ने बहुत-बहुत पाप किये हैं। और तुमको ड्रामा के प्लैन अनुसार निश्चय होता है बरोबर जब कि हम ही पहले2 वाम-मार्ग में गये हैं तो हम ही पापात्मा बने हैं। रावणराज्य में पहले2 देवतायें ही वाम-मार्ग में गिरे हैं। यह बाप ने समझाया है। यह भी कुछ न कुछ आटे में लून जैसे निशानियां हैं। अभी बाप डैरेक्शन देते हैं पापात्मा से पुण्य-आत्मा बनने। कहते हैं याद की यात्रा में रहो अथवा योग लगाओ। योग भी स्त्री अथवा पुरुष दोनों को ही लगाना है। क्योंकि यह तो प्रवृति-मार्ग है ना। यह बातें क्लीयर कर समझानी है। यह योग है ही प्रवृति-मार्ग का। योग कायदे अनुसार लगेगा भी उन्हों का। फर्क तो बहुत बतलाया है तुम मुझ से योग लगाते हो वह रहने के स्थान से योग लगाते हैं। यह भी बच्चे समझते हैं हम कभी भी ब्रह्म से योग नहीं लगाते न लगाया है। न कभी साधु सन्त के कहने से भी लगा सकते हैं। उनको तो क्लीयर समझाना होता है। बाप से योग लगाने से सुख का वर्सा मिलेगा। बच्चों को खुशी होती है। वह तो सुख के अनुभव को जानते ही नहीं। तुमको समझाया जाता है। तुम सुख के अनुभव को जानते हो। तुम हरेक धर्म को, सारी दुनिया को समझते हो। आदि, मध्य, अन्त को जान गये हो। तुम्हारी बुधि में पहचान है। जानते हो फलाने2 धर्म वाले इतना ज्ञान उठा नहीं सकेंगे। हमको भारतवासियों को ही देना है। वह बाप को अच्छी रीत जानते हैं। तुम्हारे पास म्युज़ियम अथवा प्रदर्शनी में आते तो बहुत हैं। म्युज़ियम में आते ही आते हैं। प्रदर्शनी में कितना तुम खर्चा करते हो तो भी इतनी रिजल्ट नहीं निकलती। म्युज़ियम में एक ही बार खर्चा होता है। फिर रिमाईन्डर भेजते रहो। पर्चों में भी ऐसे लिखो। शिव बाबा को याद करो। भगवानुवाचः मामेकं याद करने से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भस्म हो जावेंगे। अभी तुम्हारा काम है सभी को रास्ता बताना। यह तो जानते हो बाप रास्ता बताते हैं। तुम भी औरों को रास्ता बताते हो। मैसेन्ज पहूंचाते हो। बाकी सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह तो कामन है। मनुष्यों ने लाखों वर्ष लगा दिया है। तो कोई भी बात स्मृति में नहीं आती है। तुमको स्मृति में आता है। बाप ने 84 का चक्र भी समझाया है। और तो कब कोई 84 जन्मों का राज़ समझाते ही नहीं। वह सभी है भक्ति-मार्ग। बच्चे जानते हैं भक्ति क्या ज्ञान क्या है। भक्ति-मार्ग वाले भक्ति ही सिखलाते हैं। अभी तुम हो नये ज्ञान के धर्म वाले। तुम भक्त नहीं हो। तुमको बाप आकर के सदगति का रास्ता बताते हैं। पढ़ाते हैं। बेहद का बाबा, बाप भी है, टीचर भी है। नालेज भी देते हैं सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त की। सीढ़ी कैसे उतरते और चढ़ते हो यह तुम्हारी बुधि में है। सतयुग से लेकर उतरते2 कलियुग में आये हैं। फिर अभी सीढ़ी चढ़ते हो योगबल से। वह है भोगबल, जिस से सीढ़ी उतरते हो। चीते-चीते अक्षर नोट करनी चाहिए। तुम्हारे म्युज़ियम में थोड़े2 आते हैं वह अच्छा है। बहुत मनुष्य आये इसमें खुशन होना है। तुमको हर्ष लगती है बहुत आवे। बाप कहते हैं भल थोड़े आवे, तुमको बहुत धीरे2 समझाना चाहिए। मनुष्य ही समझ सकेंगे। जनावर तो सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को नहीं जानेंगे। पढ़ाई मनुष्यों के सिवाय और कोई तो पढ़ते ही नहीं। पढ़ाई को भी सिद्ध करना है। बाप एमआबजेक्ट बतलाते हैं। मैं तुमको राजाओं का राजा डबल सिरताज बनाता हूं। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। सिर्फ क्या करो। बहिनों और भाईयों अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। परमात्मा और आत्माओं का मेल भी अभी बरोबर है। जैसे तुम शरीर में हो बाप भी कहते हैं मैं शरीर में आता हूं। तुम उनको ही याद करते हो। उन से ही सुनते हो। जो भी पहले आते हैं उन से फार्म भी भराना है। बिगर फार्म भी तुम पूछ सकते हो। बाप कितने हैं? एक होता है लौकिक बाप, दूसरा होता है पारलौकिक बाप। पारलौकिक है आत्माओं का बाप। जब आत्मा आकर माता के गर्भ में प्रवेश करते हैं तो फिर उनको मभा कहना पड़े। बाबा को भी याद

करते हैं। फिर निराकार को भी जरूर याद करते हैं। अभी तुम जानते हो बाप साकार मे आये हैं। कल्प पहले भी आया था। राजयोग की पढ़ाई पढ़ाई थी। यह पढ़ाई है ना। और कहीं भी रूमआबजेक्ट है नहीं। तुम बच्चे जानते हो यह है सच्ची गीता पाठशाला। यहां तुम मनुष्य से देवता बनते हो। उन में भी नम्बरवार है ना। कौन सो देवता बने। मुख्य है तो यह ल०ना०। यह बनने की रूमआबजेक्ट है। नर से नारायण बनना है। इतना ऊंच बनाने वाला तो बाप ही है। नर से नारायण डबल सिरताजफिर नर से नारायण सिंगल ताज, वाले भी हैं तो बिगर ताज भी हैं। बहुत राजाओंकक का नाम ल०ना० होता है। पवित्र राजाओं का वही नाम तो अपवित्र राजाओं के भी वही नाम। मुख्य है यह ल०ना०। जिनको ही भगवान भगवति कहते हैं। जरूर उन्हों को भगवान ने ही राज्य दिया होगा। भगवानुवाचः मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। ऐसे तो नहीं कोई ने भी सिखाया। कृष्ण वा फलाने ने। ज्ञानदेने वालों तो एक ही है। बाप। और एक ही टीचर है। पहले2 तो निश्चय-बुधि चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ कहना हैशिव बाबा को यद करो। इससे भी समझेंगे नहीं। जब तक दो बाप का परिचयदो। शिव का चित्र ही अलग है। कृष्ण का चित्र बिलकुल अलग है। कृष्ण को कहेंगे रचना। वह है रचयिता। बच्चों को बाप का परिचय चाहिए। बाप शिव परमपिता परमात्मा है। वह है सभी आत्माओं का पिता। पहले2 बच्चों को माथा ही इस पर मारना है। शिव के चित्र के आगे उनकी महिमासहज समझाना है। ऊंच ते ऊंच वही भगवान है। गाया भी जाता है "सगल समग्री तुमरे शुतरधारी"....सूतर में सभी दाने मोती रूड माला के पिराये हुये हैं। रूद्र माला कितनी बड़ी माला है। 5000करोड़ मनुष्य हैं। कितनी बड़ी रूद्र माला है। सभी की सदगति भी करते हैं। कैसे करते हैं वह तुमको समझाना है। इस समय तो सभी दुर्गति में हैं। तब तो सदगति का नाम निकालते हैं। गति-सदगति, मुक्ति-जीवनमुक्ति यह नाम अभी ही निकलती है। सदगति में नहीं निकलती। सदगति देने वाला एक ही बाप है। तुम एडाप्ट होते हो। साकार प्रजापिता ब्रहमा से फिर पढ़ाई मिलती है। जिस से तुम विष्णु पुरी के मालिक बनते हो। विष्णु के माला में पिराये जाते हो। विष्णु को बाप नहीं कहेंगे। विष्णु से ही वैष्णव अक्षर निकला है। विष्णु से दो रूप निकले हैं। यह है सम्पूर्ण निर्विकारी। वैष्णव निर्विकारी को कहा जाता है। वैष्णव कब विकार में नहीं जाते, हिंसा नहीं करते। वैष्णव के राज्य में तो देवतायें ही होते हैं। देवताओं की लड़ाई हो न सके। वहां राज्य ही नहीं एक है। देवताओं और दैत्यों की लडाई है नहीं। देवतायें सतयुग में होते हैं। वह तो कब लड़ते नहीं। लड़ाई इस समय तुम पाण्डवों की है माया से अथवा असुरों से। असुर भी 5विकार हैं। जिन में 5विकार हैउनको असुर कहा जाता है। यह तो तुम क्लीयर समझा सकते हो। अभी रावण राज्य है। हर वर्ष मारते ही रहते हैं। पहले2 तो यह सिधकरना है। दो बाप है। एक है लौकिक दूसरा है पारलौकिक। अभी पारलौकिक बेहद के बाप को याद करना है। वह बाप है ही नई विश्व का रचयिता। उनको याद करने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। और स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। यह है वसीकरण मंत्र। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। और पवित्र बनो। काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। जो सर्विस पर बच्चे रहते हैं उन्हों की बुधि में ऐसी2 खयालात चलती है। अनेक प्रकार से समझाने लिए पाईन्ट याद रहती है। जो सर्विस ही नहीं करते उन्हों को तो पाईन्टस याद भी नहीं रहती। पढ़ाई मे कोई कच्चे कोई पक्के तो होते ही हैं। जो जितना पुरूषार्थ जोर से करेंगे वह उतना अडोल अचल रहेंगे। माया उनको हिलावेगी नहीं। अन्दर में आता है तो है ना। माया के तूफान भल कितना भी हिलावे परन्तु हम अडोल रहेंगे। यह पिछाड़ी की अवस्था होनी है। विनाश के बाद। बाप तो कहते हैं यह तो बिलकुल सहज समझानी दी जाती है। तूफान भल कितने भी आये उन से डरना न है। आंखें भी बड़ाधोखा देती है। इसलिए बाबा कहते हैं अपन को आत्मा समझने से दूसरे को भी आत्मा देखेंगे। कोई धोखा नहीं आवेगा। यह है पिछाड़ी की कर्मातीतअवस्था। फिर भाई-बहिन की अवस्था भी पक्की हो जावेगी। हम आत्मा हैं। फिर शरीर का भान ही नहीं रहता। जितना तुम

बाप को याद करेंगे उतना ही शारीरिक सम्बन्ध निकलता जावेगा। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप तो कह सकते हैं यह कितना पुरुषार्थ करते हैं। सभी ब्रह्मा मुख वंशावली बन सकते हैं। बाबा अभी भी कहे सभी बच्चे क्लास में मिल कर बताओ रुद्र माला के कौन2 लायक बने हैं। इस समय तो श्री बाबा के पास इसपन्स आ जायेगा। जो समझदार होंगे। ऐसे2 हम नहीं नाम निकालेंगे तो नाम बदनाम हो जायेगा। नहीं। यह तो बाबा डेफान देते हैं ना। शुरू से लेकर समझाते रहते हैं। तुम भी समझाते रहते हो। समझ कर फिर औरों को समझाते हो।

बाप बूढ़े आरगन्स का आकर लोन लेते हैं। बूढ़ों को खांसी होती है। इनके आरगन्स को खांसी होती है। यह तो पुरानी साथी है। अभी बच्चों को चक्र का राज तो समझाया है। बाप को याद करना है और चक्र को याद करना है। फिर से समझाते रहते हैं। नया कोई आता है तो उनको भी यही समझाना है। दो बाप तो हैं ना। हद का और बेहद का। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। अविनाशी 2। जन्मों लिए। सो भी मिलेगा जरूर संगम पर। यह समझने में कोई डिफिकल्ट बात नहीं है। परन्तु प्रतीर बुधि मनुष्य इतनी सहज बात भी समझ नहीं सकते हैं। यह तो कोई भी कहेंगे दो बाप तो बराबर है। समझाना भी मनुष्यों का होता है। बाप ही आकर के समझाते हैं। राजधानी स्थापन होती रहती है। बेहद का बाप, परमपिता परमात्मा तो एक ही है। ऐसे नहीं सभी आत्माओं को परमात्मा कहेंगे। नहीं। परमात्मा तो एक ही है। वही सिखलाने लिए निमित है। क्रियेटर भी उनको कहेंगे। नई दुनिया क्रियेट करते हैं। एडाप्शन के सिवाय तो नई दुनिया क्रियेट हो न सके। प्रजापिता ब्रहमा तो सभी का पिता है। उसकी वाईफ कोई है नहीं। योगबल से रचना होती है। तुमको योगबल से एडाप्ट किया जाता है। वह है लौकिक यह है पारलौकिक। लौकिक बाप से तो हद का वर्सा मिलता है। वह भी ले सकते हैं न भी ले सकते हैं। वर्सा देनेवाला मर जाता है। बच्चे बहुत हैं आपस में ही झगड़ा हो जाता है। यहां तो ढेर बच्चे हैं। कोई का भी प्राप्ती के लिए झगड़ा नहीं। यह प्राप्ती सभी को मिलती है पढ़ाई से। पढ़ाई से प्राप्ती सिर्फ अभी ही मिलती है। पारलौकिक बात एक ही है। बाकी तो सभी है उनके बच्चे। एक बाप से क्या प्राप्ती मिलेगी? नई दुनिया। नई दुनिया का रचता है। नई दुनिया का रचता है राम। पुरानी दुनिया का रचयिता है रावण। यह भी सहज समझाने की बातें हैं। वह तो सभी हद की बातें हो गई। वह है विकारी बाप, यह है निर्विकारी बाप। सतयुग में रावण का नाम ही नहीं होता। वह है ही देवी दुनिया। बाप समझाते हैं बाद में रावण राज्य होता है। तो तुम्हारी चलन भी आसुरी हो जाती है। सराप जिसका मिलता है उनका गीत थोड़े ही गाया जाता है। रावण का गीत कब कोइ गावेंगे? उनकी कुछ भी महिमा नहीं करेंगे। हां बाप की महिमा गाते हैं। यह सभी बातें बाप ही इस समय बैठ सब समझाते हैं। बाप नहीं है तो सभी भक्ति में ही लगे रहते हैं। तुम भी भक्ति में थे। अभी मालूम पड़ा है। वह कोई ज्ञान नहीं है। वह सभी हैं भक्ति। ज्ञान से सदगति रूपी दिन बन जाता है। भक्ति तो होती है रात। शास्त्रों में भी है ब्रहमा का दिन और ब्रहमा की रात। माना ब्राहमणों का दिन और रात। बड़ी महिमा तो ब्राहमणों की है। अभी है संगम। न रात न दिन उनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगम युग के ब्राहमण। इनका किसको भी पता नहीं है। ब्राहमणों का यह संगम पर ही कुल होता है। पुरुषोत्तम बनने का यह है पुरुषोत्तम संगम युग। बाकी नीचे उतरने वाले युग का तो नाम भी नहीं लेते हैं। पुरुषोत्तम संगम युग की ही महिमा है। जब कि पुरानी दुनिया चेंज होती है। किसको भी पुरुषोत्तम संगम युग याद रहे तो भी अच्छा है। हम पुरुषोत्तम अर्थात देवता बन रहे हैं। पुरुषोत्तम संगम युग होने कारण पास्ट और फ्युचर होता है। पास्ट में हम कलियुगी रावण राज्य में थे फ्युचर में हम पुरुषोत्तम बनते हैं। कैसे, बाप को याद करते2 चक्र फिराते हम स्वदर्शनचक्रधारी बन जाते हैं। मुख्य बात तो दो बाप की समझानी है। जब भी कोई दुःख होता है तो हे ईश्वर, हे भगवान, ओ गाड-फादर कहते हैं ना। दुःख में उनको ही याद किया जाता है। यह है दुःख

की दुनिया। तुम सभा में भी समझा सकते हो। स्त्री वापुरुष दोनो को दो बाप है। लौकिक और पारलौकिक। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जो है ईश्वर है प्रभु है परमपिता नहीं कहेंगे। लौकिक बापको तो भगवान नहीं कहेंगे। भगवान को हम याद करते हैं जानते हैं वह है स्वर्ग का रचयिता। वह तो जरूर हमको स्वर्ग का मालिक बनावेंगा। स्वर्ग के मालिक थे। फिर कैसे बनते हैं। सिर्फ कहते हैं बाप को याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। तकलीफ ही थोड़ी है। प्रदर्शनी वा प्रभात फेरी करने से किसको एकान्त में बिठाये समझा न सकेंगे कि दो बाप है। हां भाषण में समझाते होंगे। हम नई2 बात नई दुनिया के लिए समझाते हैं। यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। विनाश तो सामने खड़ा है। नई दुनिया के लिए जरूर वेहद का बाप चाहिए। एक बाप ही नई दुनिया स्थापन करने वाला है। उनका वर्सा आधा कल्प मिलता है। फिर रावण के आनेसे पुरानी सृष्टि हो जाती है। नई सृष्टि बाप के मत पर होती है। पुरानी सृष्टि रावण के मत पर होती है। रावण की मतसे असुर बनते हैं। बाप की मत से देवता बनते हैं। 84 जन्मों का भी हिसाब चाहिए ना। भाषण भी जब करते हो तो टापिकस के लिस्ट हाथ में हो। पहले तो एकान्त में रहना होता है। अपने स्वधर्म में टिको। आत्मा तो शान्त स्व है। शान्तिधाम से यहां आती है पार्ट बजाने। आत्मा है ही शान्त स्वरूप। फिर आते2 अशान्त होती है 84 जन्मों बाद। सतयुग त्रेता में शांति रहती है। शान्ति का सागर बाप आकर वर्सा देते हैं। फिर विकारों में फंसने से अशान्त हो जाते हैं। फिर आकर बाप शान्ति स्थापन करते हैं। शान्ति स्थापन करने वाला बाप रचयिता ही है। अशान्ति स्थापन करने वाला रावण रचना है। तुम बच्चों को भी समझाने में टाईम तो लगता है ना। कल्प2 समझाते आये हैं। यह भी जानते हैं जो पास्ट हुआ फिर जरूर होगा। ड्रामा में नूंध है। इस लिए कोई बात में संशय की बात ही नहीं। ड्रामा अनुसार एक्युरेट ही होता है। ड्रामा की रिपीटेड रिपीटेशन है तो कुछ भी संशय नहीं होगा। कोई भी चला जाये संशय नहीं। कल्प पहले भी यही पार्ट बजाया था। ड्रामा है ना। जो कुछ होता है ड्रामा अनुसार ही होता है। जानते हैं हर बातें कल्याण ही कल्याण है। यह है ही कल्याणकारी युग। जो कुछ होता है कल्याण के लिए होता है। हमको फटकने की दरकार नहीं। भक्तिमार्ग वाले कलियुगी मनुष्य फटकते हैं। मोह होता है। यहां तो मोह निकल जाता है। कोई2 को पति तंग करते हैं तो अन्दर में कहती हैं कहा इनके प्राण निकल जाये तो हम छूटें। फिर और सम्बन्धी भी कितना तंग करते हैं। पति गया तो स्त्री स्वतंत्र होना चाहिए। परन्तु यहां तो फिर और सम्बन्धी भी बन्धन डालने लग पड़ते हैं। बहुत बन्धन आते हैं अनेक प्रकार के। इन बन्धनों से पार होने में टाईम लगता है। बच्चों को तो अपार खुशी होनी चाहिए। राजधानी स्थापन हो रही है। देखते हैं जो सर्विस करते हैं उनको खुशी भी रहती है। जैसे बाबा अपकारियों पर उपकार करते हैं तुम सभी को उपकार करना है। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि जल्दी2 हो जाये नहीं। तुम सर्विस करते रहो। ड्रामा बिलकुल मिशल चलता रहता है। तुम फिक्र से फारग रहो। फालो फादर

ड्रामा में जिस समय जो नूंध है वह होता है। कोई का शरीर छूटना है, धरती हिलती है ड्रामा का पार्ट चल रहा है। इस निश्चय में तो अडोल अटल रहना है। कोई भी फिकरात की बात नहीं। यह तो पक्की गैरन्टी दिल अन्दर बांध लो। एक स्वीट फादर को ही याद करना है। और सिर्फ सर्विस करनी है। उठते बैठते चलते-फिरते गृहस्थ व्यवहार में रहते बाप को याद करना है। दुकान में धंधा आदि करते भक्ति में देवताओं को याद नहीं करते हैं। हनुमान के पुजारी होंगे तो चित्र रख देते हैं। अभी बाप कहते हैं और संग तोड़ एक को याद करो। कितना सहज है।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार, दीदी नम्बरवार कहें? स्वर्ग में तो सभी जाने वाले हैं। तो फिर नम्बरवार क्यों कहें। पढ़ाई में नम्बरवार तो होते ही हैं। अच्छा मीठे2 बच्चों को याद प्यार नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार गुडमार्निंग और नमस्ते।

-:: शिव बाबा याद है?::-